- Title Styll
- Accession No Title –
- Accession No -
- Folio No/ Pages -
- Lines-
- Size
- Substance Paper –
- Script Devanagari
- Language -
- Period -
- Beginning -
- End -
- Colophon-
- Illustrations -
- Source -
- Subject -
- Revisor -
- Author -

Remarks-

(S) R2-Mārkandeya-Purāna, Varanasi. Chowkhamba Vidyabhawan, 1961. Sukla, Badri Nath. 39,731. 147b.

ENKLERGEBISTER BED TO TOP TOP TO THE STATE OF THE STATE O ड का स्नानाधिकारः करंत्र पतिकारिष्व वा मध्येषा रहेत्र विषय प्रशास्त्र ते करंत्र त्या प्रतास स्वयं के तस्य विषय ली ह ते दा विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय प्रशास करते हैं त्या के त्या के त्या के त्या के त्या के त्या के ति हो ते दा विषय विषय विषय विषय करते विषय विषय विषय प्रशास करते हैं ति विषय के ति विषय के ति विषय के ति विषय क विसालितित्र विभावति १० माम्यु की विष् वे स्टाले निसालिति स्त्रीति है स्त्रीति विष्या विषय विद्याति विद 馬馬斯 त्यहं हिता व्याहार स्वाहार स्व वित्राम् विद्यात्मात्म विद्यात्मात्म विद्यात्म विद्य विद्यात्म विद्यात्म विद्यात्म विद्यात्म विद्यात्म विद्यात्म विद विवादान के मान्य के 

गार्ने हा को देने देने ता संभागित हो हो दिया ति ता को भी अपरि हा हमा स्थायन ने बया स्थित है भेग हा मा वेश के यह शेर हो प्रयंतित हा महिमान समार्ग मार्थ मार्थ मार्थ हो हे हु ह समाना जाने कि स्थान ने ता वह सो हुंभ : मार्थ के ने का का करते मार्थ विक्रियं ने त्रामाची ने स्वाम के त्र में विक्र के त्र के त मवित्र इते ते रोत्र में सिन १ थ ने बदी का ते वीलिशकारः की शेलि जा खेली हो ते ने ते ने वे वे वे वे वे वे वे ते ने ते ने ते ने ते व रिस्र मिल्यो । निर्मेश्वर एक विकास के महिल्ल । अवयोष्टिक के स्थान कि स्थान कि स्थान के स्थान के स्थान के स्थान वर्ष त्रेतेत्र वित्र हे त्र के व्यवस्था के विष्ण तमा है के हिल्ला के स्थान के स ःपत्रवार्मसेभयो साधिकारः प्रत्यति। विते हे उदिस्य स्वास्थ्रे वरो सुने ग्रेस्ट्रियार्थस्य नामिकार हरमः एक्ट्रातिम् तीम् तिम् तिक्वित्व हर्वाति हर्वाति हर्वाति । उत्तर्भावित्व । उत्तर्भावित्व । उत्तर्भावित्व । महिन्द्र होते ही के किया है कि हिन्द्र के किया है कि हिन्द्र होते हैं कि हिन्द्र है कि है स्ति कि मार्वित के मार्व के मार्वित के मार्वित के मार्वित के मार्वित के मार्वित के मार्व के मार्वित के मार्वित के मार्वित के मार्वित के मार्वित के मार्व के मार्वित के मार्व के मार

व्यारे ही स्पयोः शायो दिए सिका शिवः ब्रिक् व्या स्थाय स्थाय

प्रवासकायतयः महास्रमेगहस्यानाप्रित्यर्थः मसद्वातां मोद्वेरम्बां महस्यादीनां त्रादिशयाकामक्री धनवादयः मुन्नद्रभाषे कानेति ध्वायास्तानेतें सुप्रद्रमणः एर्डिनस्रो अत्रानस्त्रेधः सम्रमः २ ग्रम ग्रम ग्रम

मन्तर्गिक प्राणा मन्ना विष्ठा मन्तर्गिक विष्ठा विषठा विष्ठा विष्

त्यावनागः विशाः या म्हेल्यम् तमः करणावनारात्रारात्रम् तिद्शमननं ५ ने क्रिनेष्णायान द्वारिकाया करितेष्णा चतुर्यात्रम् चतुर्यात्रात्रेष्णाहः २ दिर्गातन्यरेः क्रमान् द् त्राकरचवात्यवागेडके शार्यात्रेष्ट्रेयः चवर्षामकुलकेतेन चत्रेक

18

एवं नवमर्थमता क्रामा श्रीयात विशेषाति नविष्णा वाजाति नविष्णा वाजाति नविष्णा निशेषा निशेषा निशेषा नामित नदेश नाह सचतुर्वधः १ तिहरूकि ने ति कि देशका के विकास के वित्र के विकास द्रान्द्रतकतात् प्रस्तत्र हाण्याप्रधाते हि पर्याचनात्र स्वातं त्रिकः त्राह्र महत्।दे स्वयं कत्र वः प्रधाते ती धेते य स्वित्तात् विकाला स्वातं नातमानातारा दर्वत मुक्टेर सम्बतारविज्ञानंतिक वतः परंत्रता राभावा र मनिक क्वानिविद्या स्वाति नेतार रित स्मार्थकिति कारणंच वित्रामिक स्मारणंच वित्रामिक स्मार्थक वित्रामिक स्मार्थक स्मार्यक स्मार्यक स्मार्यक स्मार्यक स्मार्यक स्मार्थक स्मार्यक क्रियारणमें विवर्धावरतीरितः विवर्धानामस्यानां महाराष्ट्रीयः । नेवितिकः यावतिकानस्तितिद्वाप्रयोः वारमानभवः निक्रमानार नाणारवोः काराविकातार जनार्यन नाम नेवार्यनस्पवप्राणे प्रशास्त्र प्रतानात हतः प्र नरमुन मार्ज्यक्रितार माध्यरित्सभागावतार व्याप्त क्षेत्र क्षेत्र निक्रमाना क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र नेवार क्षेत्र क् 

्राध्ना ता त्राविष्ठा के त कि क्ष्राविष्ठा के त्राविष्ठा ने अतिहत्राध्यावशेषतं व्यक्ति एवेचो मेलिहास्कृतासा रवीतिहासमाह क्रियातितिति कार ए यह तिसमास्त्र से स्वयः अ हते कर गर विवासिक मिरामाना भाषा किल्ला का का स्थान के स्थान के स्थान का स् बदमनेति ताम्याकरमरवहतिमां त्रात्माममंबतः किल्नेनद्वहति ज्ञानकितियायः सन्त्रेनया पाटाहर्गाः ज्ञानवहति वादाहात्त वनक्रमानान्योगः व्यानम्तान वानाम्यक्रमः १ मिलेयामयक्रम्भेन का हारिति हार्यामाव क्रतेत्र मनेनेनवहाये वाद्याना महीनित्त हाराधनाते प्रावण्यायां समी हार्यामधिक्रमें होति क्रवत्य का स्वाविक्री स्वोविक्रमें नेने महत्ते माने धर्मित्यम्य धर्मित्यम्य माने क्रविवधिक्रा मान्यस्ताद्वन्य धर्मित् क्रविक्राहिक्तमेथित्रात्मक्रमे हार्यामधिक्रमे हार्याक्रमेथितः व्याप्ति क्रव्याप्ति क्र एवं सर्गक्रका तरें दे कि सर्ग कर तरें का के का मान विस्ता का कि स्तार कि स्वार वा विश्व के कि स्वार का कि स्वार कि स्वर

एकोनिज्ञाध्याधिविष्यसार्धितः विसर्गः कार्यस्थातेः कार्यवध्या चतर्विधं सीकालेषा छ्वे उद्यक्ति इत्या स्थानिक सामा समारामान

यागिनः वतिवधिवाणायनात् तन्नमञ्चाधिकारंशा सिमित्रमञ्चाधिवानास्न निमान वद्गाति मन सिमान स्वाधिकारे कित् सर्वाणाधिकारे कित्र सिवत्ते सिवला सिवान प्रेणा कि द्वारा के प्रस्ति । से प्रस्ति । से

किय

न्यानेत्रवाणान्याः कीते ह्यादिविद्यानासि विक्रमादिन्ययं अर्थायये तिस्ति धितायां अप्यायायीनात ध्यानाति नी विदिने रियमेत्र पा नी वे स्वापार ले हर्दर एकं ने रामधारों। १० एं ते उद्योग्नयादिवयम् अपास्तीतां पुरस्त त्यस्व नी वृद्या धाराणां कार विश्वमित्र शाला अर्थे मितः एकते प्रस्ति त्यस्त्र ने त्यस्ति साम्याया स्वापाद स्व

विमर् विकृतनि अपनि स्वित्व वितालि स्वित्व वितालि वितालि स्वित्व स्वत्व स

नित निक रकात्य

- 1

एवं कामात्रिधकारिए से के वर्तियान सन्तानी सायाः प्रथम मेरे संग्रेय के वर्ते व नाय सारा करि मार्मिरिक कारणाना नगडे त्नां महराद तताना जेन साका शा हो एके सा खोणको गमाने त्विक नारी गर्भना प्राचामा यह भारत के विकास के व तम्बेत्त्रशिवायध्यापाः सर्भवलेने सर्गः कारणम्भानानि नामायोगलात्वापाः विद्रायोगः व्यमभे नेपादे वहुत्तवे कि विद्यः सार्विभिनेनाविति हासाविति हो स्वित्व ने विद्यास्त्राचे वति विद्यास्त्राचे ने गमः नुष्याभे : सर्भवित्तार स्वप्निति ताहरे उसमाधारधो यति हितीवस्त चत्रद्रशास्त्र ने मन कारिकाराक्षक अवस्था किया यक्षित्र विश्वास के लेकिया विश्वास के स्वास के स्वास के स्वास के स्वास के स्वास के तक्लावतार वस्त्रेत्र्यात्वितित्ववा। गिते स्रिप्तिसारभ्रताच्छिम् द्वाना स्ताना स्ताना सारा स्थानिस यो स्ताना सारा हिताय सारा हिताय सारा हिताय सारा मा अवारण न्या होते तेनातिन तेनायते दिनाय के स्थिविक्ता राणात्य वेता स्थिति स्थानिक विकास नामित के ये प्राप्त के स्थिति स्थानिक के स्थानिक के

संभक्तीत् वयाक ने स्वसमव हत्यर्थः उत्तत्व हत्या व्यमा अप्रतं के लिया हत्य सम्बन्धिक प्रतिश्वेष स्वत्य विवादी मार्थिक स्वत्य स्यत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत तिति रात्रीयः महवातय रात्रीते नीर्ति भारत्य नात सकतालाभी तरहाती ए प्रव्य मस्त्रे ज्ञामल कीप लावार्ति ती वीरात्र ने वर्ति संग्रह्म त्वाय पाति तो ने दिने ना होत इसी पाते तदा गर्भ मंद्र रात्रे मंद्र रात्रात्रात्री भावे सात्राव क्षेत्रवेनम् वानारेसन्ति विवारे स्वागर्थः सन्तान्त्र श्रीतारिते भवत्रत्रवार वर्षः श्रीव स्वत्राक्तः । इत्रिवानाराद्वित्रवादिक्तिः सद्वन्ति वस्तिन्दित्रस्यानात्त्रक देश्योव क्रांत्रः कविलामा करं देनित्रितः स संभत्यवापालेषुराणक्रमात्रवेषाव अविश्वतासकारामागर्भनग्रहाति ४ धार्यम्नभवन् र्राचितापितापितन स्थाणपुः व्याभन्भितिरित्रविनाधिताधितामानस्य । स्ट्यतिगायकन्ति सम्मनलमा जलेने वाधिव ति गर्भारतेषितस्या इयेक्सान्तिरित्रवनः स्थाति गविद्विदेशिधनायः सदलक्तवस्य गायकन्तिन्ति। सेष्माधिमोद्देवः बन्वसिम्बभववेवराष्ट्रं मोनना तृ विन्ता १ मेनार्के तृ त्वन्धा करारमेदः रिग्धयाप्रदेषः सञ्जाहबरांगंधारविष्ठार्वते सकला १५ रहती सिति सिका ज्याचित्रती हाति । प्रति । तेसत्प्रवचागंहवासे १५ धतमध्यक्रतेल्व हतीकल श्रक्तमाञ्चाचा विवालक्षित्रात्रके नेसत्प्रच्याग्रहणास्परप्रधानम् अयुक्ततास्य एता पार्वे । इष्प्रितेः एष्ट् प्रद्याग्रितिरिष्प्रादितोरीयो ज्ञानित्त त्रभेरेकाभयमात्रात्रात्र त्रातिष्णे च वृत्ते भयोग्रेत यो स्वादिक् नवतनी से प्रीः हे । यक्ति स्थाने के तार्वति स्वादेश कर वह प्राप्त मनिषाति गाये न माविनपादियः श्रन्वा त्यात या स्वादक्त नवता तथा । ए व्याल क्यान स्वावक्त नवत्य स्वावका विकास ने विवाद क्यान स्वावका स्वाव का पलस्वाले संयग्नाएत वित्रतेन वच विकाता सभा डेप्लियोस यु दिनानिया वत् तेत्र रहा यो नेता लिया प्राप्त है

्र वेधापन्न तने स्वाहित्ति स्वाहेण विश्वाहित क्षा वा स्वसायाः त्रिवना का कर्ने विश्वाहित पूर्ण मध्यूणी ति हिल्ली त्रिप्री द्वाहित क्षा वा स्वति विश्वाहित पूर्ण मध्यूणी ति हिल्ली त्रिप्री द्वाहित क्षा वा स्वति विश्वाहित क्षा विश्वा

त्रथंडेत्रताः काद्मीतित्रवाण्णिक्तं सर्वात्रियेकाले त्रवित्रविष्यत्तेवं प्यावित्रोक्तं प्रारं पुत्रं ए त्रव्या वर्ष वेष्ठकं वंदानं संप्रतारेवलं वंदाने ने वार्णावं प्यात्राभी पार्षिते यह त्रण्या पुरर्शनं वापु के त्रविवित्रे प्रीत्रक्षेत्र के प्राणा धारं स्प्रात् जा प्रतिष्ठ ने त्या प्रता प्रतिव्याप्त प्रतिव्यापति व्याप्त प्रतिव्यापति व्याप्त प्रतिव्यापति व्यापति व्यापति

ण्टांदिधिकारः उत्यद्मित्रकाराः अवस्मित्रका विश्वासित्रकिविन्नानेस्मिता उत्यादिनात्रिया वत्र के क्लाम क्षेत्रका वे स्प्रमेदिनाः विश्वासित्रके किला अस्प्रेट्यां विश्वासित्रके किला के स्प्रमेदिना के स्प्रमेदिना के स्प्रमेदिन के स्प्रमेदिन किला के स्प्रमेदिन के स्प्रमेदन के स्परमेदन के स्प्रमेदन के स्प्रमेदन के स्प्रमेदन के स

्रवंदिस्तरिकाम मत्रावं स्वानं वने विश्वितातितार वने हते स्वानं लन्यति मधीरापानं स्वानातिते मधीरापानं स्वानातिते मधीरापानं स्वानातिते मधीरापानं स्वान्ति मधीरापानं स्वान्ति मधीरापानं स्वान्ति मधीरापानं स्वान्ति स्वानिति स्वान्ति स्वान्ति स्वानिति प्रमानमध्यपर । द्वारा । विकास विकास में द्वारा विकास के स्वारा के स्वरा के स्वारा के स वनस्यानमध्यायः चिद्वमायानद्वायः मर्वादायानमध्यानमास्यानास्य मदतः । द्वाकाः दिति द्वाः यात्राविषव स्वाद्वदेः दिते द्वाः विषयिनविद्याः स्वाद्वदे । द्वाः विद्याः स्वाद्वदे । द्वाः विद्याः स्वाद्वदे । द्वाः विद्याः स्वाद्वदे । द्वाः विद्वविद्याः स्वाद्वदे । द्वाः स्वाः स्वाद्वदे । द्वाः स्वाद्वदे । द्वाः स्वाद्वदे । द्वाः स्वाः स्वाः स्वाद्वदे । द्वाः स्वाद्वदे । द्वाः स्वादे । द्वाः स्वाः स् विषेत्रेमेण महामाने के विष्ण के स्वार्य के विष्ण के स्वार्य के स्वार्य के स्वार्य के स्वार्य के स्वार्य के स्व स्वार्यः स्वर्या ने ने ने स्वार्य के स्वार्थ के स्वर

अहेलकोन्विश्वामप्रिः मानगरेतरे: कर्मणायनप्रेर्ध्य स्थानयोनननने तिहंनी तिर्मर्काद्यासने स्थानमिति व करेंवियानकेयत्रम्याते: प्रस्तानितः थ सादग्रासानाप्रिस्मात्रमं इस्यवणा दिवि निप्तिः वा अण्याभिष्ठे देवायं वण्णविकि वि सर्पाय स्वास्थ्य स्थानित्र विकास विकास विकास स्थाने विकास स्थाने विकास स्थानित कर्मा विकास स्थानित तेता । स्थान सामिता चना क्षाति विकास विकास विकास स्थान साम नेत्र साम न

ति सित्रमात्रकरण हमनेव त्यार त्रिविति ज्ञायाचे समाचित्रका का वित्रो के वित्रो के वार्ष विद्या के विद्या क

तानित्वप्रतालिक स्वाधित स्वाधित क्षा है ता वित्व स्वाधित स्वा

हे हेवंडेकारेव १२१४ १४ गण दे का बिसि दी कें किला तानमतों के मान संख्या प्रकल्पनात १६ २१

वितः विद्वानित्र ने स्वार्थने विद्वानित्र के स्वार्थने विद्वार्थने विद्वानित्र के स्वार्थने विद्वानित्र के स्व संस्थाने के दिन्द्र ने शपनने स्थिति विद्वानित्र कि तिवस्ति हता एए दे वे त्रित स्वार्थने विद्वानित्र के तिवस्ति हता प्रति के तिवस्ति के तिवसि के त

नेप्रवेशनन्विष्ण हा यभेदानाह गरिभित्यादि हाईनमाधिननं वन ही तन पंवविष्णन्यागरिभित्रिधा नेहिला कित विष्णा के तिया के त्या के तिया के ति

de de

अपनान दारिप्रतिष् द्वाना ह संग्रामा ज्ञावाये कार्विव तिः त्रत्रं द्ववित्रा तेः बहुन्ता नांवु भत्तव्यात्र व्यवस्थाद्धवः प्रसायत्व । विद्याने द्वाने विद्याने द्वाने विद्याने व

यण्यमातादेखाः त्राणाः हेणे णदेवलाः चिद्वः हेवोणदेवानिर्दारः व्याताते गण्य द्राणाः १ वणास प्रथेषे स्प्राति देवे मता संसार्वनात्मनः संगार्वगणेव त्यर्णः तेवाहि सम्भादिक्षातः स्वाप्त भण्यवित्र कात्मने त्याः निक्ष नात्म १० वर्षे तेवाहि समादिक्षातः स्वाप्त १० वर्षे तेवाहि समादिक्षातः स्वाप्त १० वर्षे तेवाहि समादिक्षातः स्वाप्त समादिक्षातः स्वाप्त स्वाप्

14

विः देत्रसामित्रं प्रमाने वास्त्र माने वाद्या ने कि विषय माने के विषय मिने के विश्व के स्वार्थ ने कि विश्व के स्वार्थ के स्वर्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्

का अस्या मांचा कि वेत विवागः माया नय हत्यने नमावाष्ट्र माया हिनवा चिष्ण भिक्त गर ले नन दत्य प्र त्र याः भीतिर भी निर्देत होत्माग्वना न्यर्भा गरिश स्व नमान दृष्णवा ना राष्ट्रणा माया मं न स्व रित्र स्व राष्ट्रित होत्माग्वन न्यर्थः स्व ना राष्ट्र स्व राष्ट्र स

विहानम्बार्त्रीयमानमाष्ट्रप्राः कामः समयोः मेगदित्रिमार्यः एत्रमान्या च्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्या 

वार्वायन्तियान्यानियान्यानियान्यां अभन्वेद्रायनां नारम्बद्धाताः र विकारम्पर्धनादेवे न्ववित्यद्वन्व स्थापन्यम् स्वतिक्रित्रम्यानियान्याः अभन्वेद्रायनां नारम्बद्धाताः र विकारम्पर्धनादेवे न्ववित्यद्वन्व स्थापन्यम् स्वतिक्रम्यान्याः विकारम् विविद्यान्याः स्वतिक्रम्याः स्वतिक्रम्याः स्वतिक्रम्याः स्वतिक्रम्याः स्व

तार प्राप्त के बेच रिता का. प्रमाहत पर्शिका

क्यान्य निर्देश हिल्ला है से कि लिया है से कि लिया है है कि लिया है है कि कि लिया है कि 

र क्रिण्यित्रमाहित्र व्यातान पुर हहे वाणे नवंधनं न प्रवीण स्वकृति लाजपः २२ नगस्यार वो तोहित्राय प्रदाति दा क्रिण्यों इत्रविधाति विद्याता प्रवासव क्रिण्य हो क्रिण्य महत्ते नगसंधरधी नवेषु धिष्टे समागमः २५ नगसंध विधान महित्र व्याता में क्रिण्य क्रिण क्रिण्य क्रिण्य क्रिण क्रिण क्रिण्य क्रिण क्रिण

श्वनित्यर्थः वता स्रितिवक्षण नेदादि ब्रष्ट्या पनेच मतपत्राएं केव्याः ब्रद्र्यनितितिकिते व्युतदेवस्य वित्वकाणन नकस्य तिर्वेद्रितिने नस्मित्राहार्य देवत्रविभागः सत्तादिण सेः २ द्विष्ट्रीभागवतेमका प्रतिस्तिला दिका ध

त्र ह कार के तार मार्च के तार में हताक्या राम गारेका राह्य की स्थान है। है के मार्च की ति से कि मार्ग के का मार्ग के का मार्ग के किया है। है कि स क्षापंचित्रिकमी श्चित्रानंत परमागिति त्यक्तिनात त्वानस्यति सानादेन विकेव त्येत्रास्य तेये वस्त्र स्थले विकास व विष्णप्रताला विवस्तार पंचा आयो संयो ग राजि विषय माध्यो वार्यमाह ने चे विवस्ता रेपाय देनो मेण के लेविक रेपे विषय प्रार्थित स्वर्ण के विषय स्वर्ण के विष्य स्वर्ण के विषय स्वर्य स्वर्ण के विषय स्वर्ण एमवेस्पेस्ट प्रहेशक्य तृशाक्षेत्र बुत्र वृगवदाा प्रवात स्वयोग वरोक्रमसेय सिशे श्रव प्रवास प्राणिक मिना में सा स्वास

मित्र के देव के विदेश युक्तेमाको पुदर्शिते र ब्रह्म कर्मा वतारालि समक्ता शिवुग क्रिक्ति नवच क्रान्ति विश्व के ताना चार्य क्रिक्ता ४ सर्वक

ः पूर्वणिविसी रामहबद्धिनितः विच्यार्वर्त्तना सिनिविचर्वयादिनश्चित्र प

क्लाराक्याण्य माण्यां के हार्य है। हे ती विस्ता है के ती विस्ता है के विस्ता है के विस्ता है। विस्ता है के विस्ता है। विस माग्रामा १ वर्षा न्या स्वाप्त स स्वाप्ता तिति व्याप्ति वित्र श्रेष्ट स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स ह स्वाप्त क्षित्र क्षित्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्व द्शानाममस्यानात्रमितिषर्वामानात्रम्यान्यान्यान्यान्यान्यान्य विकासमानायान्य वः भ द्रोध द्रोगम

चत्रित त्यार्न वत्रिः प्रवर्णवर्ष दिनेपाध्यापत्वरस्ते विष्ठणहत्वकंद नातः त्वलत्वने कियोगिक देन स्वादं स्वर्णवर् स्वतृष्टि वित्र ना चत्र प्रिति स्वर्णवेद स्वर्णविद्य स्वर्णके स्वर्णः एवं प्रवर्णके स्वर्णके स्वर

वर्भिद्राभिषाके सम्मिन्निक्षिः समात क्रिमीभी विनः क्रिया देव वर्गातां समेवः र नाम स्व मे करमी पिः निर्दाना के समात क्रिया में क्रिय

स्ति ध्रमम्बार्वे विकास देवी हिते भार तत्र ज्ञात्र का स्वित् विकास विकास का स्वित के स्वाद के स्वित के स्वाद के स्वाद के स्वित के स्वाद क

वर्षणित्रात्रे में ग्रेश्यक्त है के त्राचित्र है के त्राचित्र है जिस है जिस है के त्राचित्र है के त्राचित्र है के त्राचित्र है जिस है के त्राचित्र है के त्राच मह हतिए शिमप्रमेत्परंगलभेतेषयम् वेशावयो प्रमात्रातीय चेको स्वारत्ताय मध्येत स्वार्वेतेष्व मात्रात्ता स्वार्वेत तिच अकृत्माव्याप्रेतेस्वरित्तार प्राय्योते "वेश्विमस्त्रातीय लेलास्त्रात्ताः के बस्कार्वेत्र स्वार्वेतेष्ट्रात विक्रम्हर्माद्वाप्रेतेस्वरित्तार प्राय्येते "वेश्विमस्त्रातीय क्षिण्या स्वार्वेत्र स्वार्वेत्र स्वार्वेत्र स्व

संभोगितिका से बार्ज विश्व हो नाम सहने १ गोणी किरह मी नामिता कि से नित्य ने हैं १ ९ ५ ता सकी उत्त विश्व विश् नरहान्यभागासम्बद्धः कालियादिविवाहभामहेना दुमाहितः २२.५४

एकिनीवं कें जा वाजर अने वो विवेद हर मना हो : वं वेप वेन १५ विष्ठीर स्वाप में प्राप्ट विशेष है । अप कार कार के अमाना है रध्यायानाह के छोड़िताया मानस्य है स्वापन के स्वापन के सामर प्यापन पर त्या प्राप्त के स्वापन के स 办

नविषये न्यू मः तेपण नेविहंदेतिदेवीवंका क्यों विद्याप र हड़के का हमार्थियाता ता होगिति की ति देश सा नष्ट दिलों को प्राहः तथा सामान्य गलान् धाषतीर्यविक्तितलारिवस्विति रणतारहित्तममध्ये विवेधीत्रयान्यकी नार्तिष्ठ स्व निष्ठित विनेषित्रं नर्श्यमप्रेणपत्मिपायत्राचानेपना रूरमणतरेवकर्तसंत्रच्यारणित्रचे विलेखान्त्रच्या ना अस्ताहे त्रवाचित्र हामानि न अने प्रजातिभवतरहाणि हुश्तेशतं मणीव तरोत्तंह ए प्रमानित्राः र शापामहें भवदनी येवं सुरिम बायसः ४० मा लिया हितात जा मन्या विविधालदा विक्र बांचा तदरा जा जयसे नी वर्ति ४२ तस्पत्रकाम कुंदी भत्तर्गभित्रपण वलः विशोषत्वतराते नवानेष्व मित्रदेश ४६ तद्येन कक्टेन संकर्यः क्रांट्यय किलो केप्रिमाणी मेनियानि हियान र तरा त्र महत्र का ति ना त्र पा सा त्र ति मेन के लेखें सतुमं का त्यं अप याना त्र विक्रिय स्वति स्वी सेख प्रेवचन मन्त्रीत किलो विधि वा का ना वर्तने ने केव भदेत भ्र त्रोतेषत्रीवृद्ये सामिकत्यापद्मायते सणे मुक्द ग्वाच यहिंद्यम् द्रोतिष्ठ ए त्रांचित्र व्याप्त प्रभा प

मंदेतवदः तंभविद्यति व्यवसंप्रदेव्यातिकातं त्रमत्वावते । अस्मासः मंदिकातिवदेवितेत्वाकु के प्रस्ताः कर्यः कर्षाः कर्यः कर्षः कर्षः कर्षः कर्यः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्यः कर्षः कर्यः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्यः कर्यः कर्यः कर्षः कर्यः कर्यः कर्यः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्षः कर्यः कर्यः कर्यः कर्यः कर्यः कर्षः कर्यः कर्यः कर्यः कर्यः कर्यः कर्यः कर्यः कर्यः कर्यः कर स्याः सार्वव्यक्षाः तमे १६ विष्ठतात्रकतं वर्ताना नेवामन्त्रतायनः रेष्ट्रप्रान्यसंयना दः रिमेगादिक ते ए स्थिति तरहे सातु हि ताति चे देवेबर शी प्रवेति नारीनिव ताति ताति सम्बत्तार स्थानिव निक्ति १८ रितर वेश्वर्य हो से प्रति हिल्ली है स्वार हो है है से स्वार हो है से स्वार है से मिष्रामिक्त किरकार्तरं करोत्रवर्धित्र में त्रवास्थानित्र १४ प्राप्त स्त्राहिता स्थानित्र स्त्राहिता कार्तिकम्प्राप्तियक्षेत्रविद्वात्रासर् २५ इतिका एक्षेत्र भाषः सोवर्तितत्वस्यात्रविद्वातंकारण ति व ते त्रवत्रक्षावे विद्यवावभवे व्यात २६ तिविज्ञावित्रवेत्रक्षं प्रवातिते न दभवात् विद्वारेष्ठित्रवं धर्म समग्रवातिरशस्य वित्रेयतेय यसातं विद्यार्थिय व्याकतेत् व व्यव्यविष्ण्यार्थितिष्णेयां तद्वेतिर्थे निर्मा के किया के स्वापन का तः किया का निर्मा के स्वापन ए प्रापमारं त्रडास्कः गतस्यासंस्थान त्रावसामित्रियाः केनित्रद्भावित्रां विस्तित्वस्थाने विक्रोबितांत्रवर्षितेषुर्वालात्कचा २१ वया हिसीया वेदस्यदर्श त्र उस्त का तताः तयाराः हारेसकतात्रताः १२ त्रिषेष्ठात्रत्र केल्र्ड्डा क्वितात्रवात्ताः त्रिधितं वर्णतीयत्रहोग्द

एवंस्कं भार्षित्र का भाषा क्ष्मार महार मादिना वंधो की उनस्य महिनकः मामने स्यु मन्त्रे में ने ना न विषये ज्या मः तेपएं अहमात्रा र केल महीर प्रमान हे हे हैं है कि है के हैं कि है क रित्रवरित्रादिकरणिव हेव इतादनग्रह सामानिक का दाव क्षेत्र हैं ते के के विषय के विषय है ते विषय के विषय

, याहा देशाहरेमी सः प्राप्तक्रीहित्रको गते मदरा सो विषया से तर खी सहरे हिथा ? रणः सरे तथः श्रीतीः स्त्री से स्वाप कारियं बसे के कार्यादित्याहरे के कार्यिताब से। य बसे दिस्ताहरे विदिश्य हा नुगते व से प्रहादस के प्रयोग व वक्षेत्रते दिन्न भागवते महाप्राणितिलाको द नवमव चल्डिश त्याक्षेत्रा न्यति व दिशाभ पतपत्तत्राक्षका

सार्या वयं रहें ति विक्रो तत्व के स्वान की निवंद है से विक्रों निवंद की निव

उण्यवमसिधार्षेत्रात् नवमेवेति वर्तार्थम् वा या नायता प्रतिविद्या मध्यापी किंति देणा नुकी तेवेत्र तत् र्षाप्ता ह्या र्णारीना नः तत्राविक्षात्र स्वार्थः स्वयंत्रीणाः १ अये तत्रिवेषणा देणात्रीया निष्ठा नामाणा नुक्तिने वर्षण र्णान् क्षेत्रण्यः नानेवार्थन रूपादिना रसः प्रथमे ध्योष्ट्रिक्षणे रूपणे । भूनोविष्ठः विद्याद्वासां स्नाविष्ठे प्रतिविध्यम् न 

राष्ट्राक्षात्मस्य राष्ट्र राष्ट्र विकारकाराष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र विकाल का स्थान विकाल स्थान विकाल स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थ लंगमातिआ नितिर्यात् स्रिक्रमात्रे अर्त्य वध्यस्य न्य ध्यात्रे त्यात्रे प्राचित्र प्रतिक्र नतात् अर्त्य वधीरा रेकान विदे पुरः प्रवेशः वेश वेशिना किरापवारात एवपद है योः किति पूरेपद्ति पुर्वे स्नान साह दे कि नी ति रा क्रिने रतः रतांतिरे वः मीह्मः शाततवः एते पुर्वशेषु धाततात् विष्विशारिषुताः वः सः वृक्षस्यवत्रा धात्याचिर्वे विषयित्राः देशा विषयित्राः विषयित्रायः विषयित्राः विषयित्राः विषयित्रायः विषयित्रा

त्राह

मंद्यात्व के देखें दे कार विभागित के मेरा ए देश लियों के शाया मित्र के ति कार्य के ति ति के ति

नः रित्रिक्षीभागवतमानुगाता नवमक्ति धः भ विश्वातित्वकं नाधा यथेषां वित्रक्षातित क्षावित ग्रालक्षात् तन्वे वे दिशाति व सः व तक्ति त्याद्र त्वतन्त्रा र तमावित रामप्रतामप्रतामप्रामाद्राशा राजिना नदंगी प्रयाति मावित प्रताक्षेत्र स्वता स्वरामित्र व स हियमात्रमित्रात्रिमित्रहं कर्ममदादिकते मेर निवा वर्षेत्रः चताम एवमे कार्या कि विशिष्ट्या निवा ति गमार्चित्रनाम प्रविक्षण वाद्य नम्बद्धिते वेषा प्रवेष हे दे के लि ज्ञान का की कि का क विश्वित्रवारशित्रवादशिवः सर्ववरणाराना नः एका दशिक्षेत्राम्य ने स्वानिवशस्य निर्मवशस्य निर्मवशस्य क्री में विस्ति से क्रियों भागविष्ठ विस्ति लायां नवमकि थः भरम

नापम्दिरत्या तत्राद्कारित्रातमः स्लाभवद्रविता स्लितिवतस्त्रा स्त्रीत् त्यामेनिकवीव्यककार्या नायमानारित्रावहणायीतिहिषयः व्यवल्यावरमानेव नविभावस्ययः विस्तरेण्येतहस्यते त्रत्तित्र नायमा नेत्रेमोतिरर्वकः नेनात्तात्व मनार्वक्षमाय ित्तानेन विपर्वन कार्यस्वा विर्शनारित्तात्व विभन्त विभन्ति स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन विभन्त स्वार्थन स्वार्यन स्वार्थन स्वार्यम स्वार्थन स्वार्थन स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्वार्यम स्व वितदार्थ्य जैताएकारामा प्रची मार्थाका ह स्वाराह ति स्वतंत्रः सर्वेत्राति वित्यारे स्वारे हिपार ने स्वार त्यांचर्मम्याद्वतं वेषण्यं नर्गाणलक्षकण्यं वेस्वतिमर्वज्ञाक्षितं याच्याद्वते वेद्याद्वायां तेरे व्याद्वयां विश्वादिक्वयः इति आदिक्वयेव्याद्वतं त्याच्याद्वयः विश्वाद्वयः विश्वयः विश्व ग्रंद्रा द्वेत्ररत्रवेद्रताध्वेद्यं वस्तात्रको विवयुग्यतिनिवि नदेनप्रणात्रवेद्यं प्रच वर्षे व्याप्ति 

मर्गःप्राद्भेते. तनधीरोष्ठः तत्रप्रथातः तेना वारित्रदाविविव्योगप्रोते विव्यत्तत्र नेतारत्राभवपा व्यापात् धः तथारवस्तरे ए वसते वसदेविरं धाला सभास्त्रास्थः समार के करा ने तिसालं ने छक्षेत्र ने तिसा चेत मयार छा अतिकाः के ने अगवतार छा त्रुजो विकार विकित्या सामा के प्राचे व स्वामा के विकार के वितार के विकार के विकार के विकार के विकार के विकार के विकार के विका भगवतिवित्रित्यन्य रिष्टा ब्रह्मा लावतीना मंग नेते या कारित क्या है या ता है याद्यमतर्थः तथाववस्थित ततः कछो मदं कर्ने तसार एएवक् स्वच उभयपाचित्रमा तमा ने के वि परमकारितकेनभगवता अस् ए। इत्यर्थः तनुमरामायेन ब्रह्मणायि हितामायां के च के छो। तान वान ता तानाकामिति ताने वाने वाहिया के वाला वित्वादिता प्रांका प्रामा से वस्य विरस्त कृति काम ति विरसंभिग्रकतेक्रकंकपदं समाणकतेमेरिकं ति विष्ति वोषिति वोषे ति तथाते तत्रहे तथा त्राहेव । यदिति खर्यणा मतिन तानन्वणाषे मुलेन स्विवामक तेन सद्ने सत् अवस्थान सेन सदा या मानद येण प्रभावने त्यां त्याचा त्यां किता त्यारिताने ज्या सता खेता वा प्रभाव इति सर्व मन व है एवं वसविष्यते नचे जानेद रथः सर्वेतः सर्वेशिकः सर्वेमारनः सर्वेष्ठ रवप्रदः सर्वापरा प्रसारिष्ठः सर्वास्त्रेषर मकारणि का विस्त्रामर प्रमाय स्मायनित साने वनते ने से प्रणा प्रेषप्रतिपा च रित्रावित विशेषण हारा विशे

म्बर्ताता के से मार्यात के हिल्ली मी में के हिल्ली मार्यात है के मार्यात के स्वाद मार्यात के स्वाद मार्यात के से म 

दार्तमुत्रमान्तिहारकार्तिक स्वार्थित विष्या हिन्द्रमान्त्र विषया हिन्द्रमान्य हिन्द्रमान्त्र विषया हिन्द्रमान्त्र विषया हिन्द्रमान्त्र विषया हिन्द्रमान्त्र विषया हिन्द्रमान्त हिन्द्रमान्त्र विषया हिन्द्रमा यत्ः कारणतः यं वा ध्यायेत्र वर्षाण प्रहादस्यपरेरामा हेवः वित्वित्वकाः विद्धात्रवारिववेत्र प्रेणस्य भावसार् वर्षवामनारमक्त्रकात्र रहे। प्रमंत्रमणः र्नव्याः विख्यपेतिवकारणं सन्नार व्यादि वार्गमनारमाध्यापायिति है मानमत्यात्र हादितिहावनताः स्वर्यमं की एएक मध्यात्र यं वत्त नक मेला के प्रति स्वर्यात माना स्वर्यात स्वर्यात स्व देव २ असमें विद्याति महारायि किर्णितियातः सियतियये विद्याति मिन्य विद्याति मिन्य विद्याति सिन्य 

प्राक्

वन्न स्वत्रां त्रात्ता त्राह उष्ट्राति तर्का व लाह आएका उष्ट्र भेषां प्रवतः चर्री तर्द् कं विहेत प्रवता विद्याता हो। तन वे कं हे प्रहार स्वाक् व त्र के विहेत प्रवत्ता के ते विहेत प्रवाद के ति के विहेत प्रविद्या के ति है के विहेत प्रविद्या के ति है के विहेत प्रविद्या के ति के विहेत के वि

इक्रमार्थितं ते हे दे दे दे ते ते ति वा चार में निया का दे ते ते विश्व के वा के विश्व के विश

देनित्रगह प्राइतिः कामग्रति वाप्रहादस्यभगवत्यावास्यादेने की गगवासना विषया भिन्न ने विषया भिन्न कि ने विषया के विषया के

京

अस्माण्याहे भी व्यवस्था है धूर्म तार्शिनात् । भिष्याते ह एंगतः ते ते वित्व र का न्ये हि ए वे बा वा वित्या गाम्यायण्डलाति । यहाँ विश्व देशत्र मानस्थिते मामित्र मानित्र देश के नित्र देश के नित्र देश के नित्र देश के नि विविद्य हैं के तर भाववन्ति चान ने स्वित्र स्वायिति स्वायिति स्वायिति हैं के नित्र हैं कि नित्र विविद्य स्वायित विविद्य हैं के तर भाववन्ति चान ने स्वित्र स्वायिति वास्त्रीयं ने विश्वास्त्रके विनातीयस्थातिकाराक्य में ने विनातीय स्थान के विनातीय स्थान व्यानम्बानम्बान्यवाद्यात्राचा विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र क्ष्यात्र क्ष्यात्र विश्वास्त्र क्ष्यात्र क्ष्यात् तर्य त्यार्या राष्ट्राय्य स्वावस्था साधायार्थः द्या त्रावित्र सिंह ति प्रत्या विसार एडंच धारे मेरियर व्याने धीम हिति याद सपर क्योग ज्ञावनी ने पत्र मेरितायाः सिवते तसावत वसार एवन ध्यापनातपन्यान थान हात व्यापन वस्ता वस्ता वस्ता है ते वस्ति है ते वसि स्यो नीवरिशं न्यू वेवेति हितितरिश्वित्वहाल व क्षीभावतास्तितं तथा व मत्यपुगले उराल दानप्रसावे यत्रा

EUI

धिक्रमा नेवर्णिते प्रविक्ताः वना सरव यो येतं त है भागव ते विद्रित के काय अवक्र में वृत्तत ता वे नेतः । वृत्ते वृत्ति के विद्राति के विद्रा व चत्रचे वं वृत्र हें व्युत्म का निष्ठ विनानि ने ने ब्रह्म द्वा यूजारिक वेष रायनेन भन्ता नुगर सहालियां विष्ट रके धनु माधेष्ठरातियास्ययायनेनक्रमेनास्वासनान्या ३ तिः सप्तरास्य ध्यात्या द्याने वेत्रशानक रोजप्यन्तवम स्किपश्रमेपस्याई मध्या वात्रभिते ते ते तावारि प्रदावितिमय इतित्वा यो दत्ता मध्या ये प्रति तः या स्वा सेनसदा विस्म कर के कि कि कि कि विषयि कि स्वयं प्रवागादिय कार्री अप में वार्य है ता पर हिला जा के कि के कि कि के कि कि कि के कि के कि कि के कि कि के कि कि कि यस्त्रे पार्वे के त्रिमा मार्थित वने त्रे त हा ग्या ने मायित वर्षेत्र मानता स्वर्णियेति वनी कत्रे य चम्हाभतेषहितम् इचेत्रवेदिमानेविराउनमापिन्यं अतित्विहर्मानेवारम्ये राज्यविक र नवंचमहाभनोयितिन मुद्रवेत से तद्विमाविति एका भागविति ये अन्तानेति में कि कि वित्रार्था वृत्र यते एवं एक्ट्रिस्मकार की भूनेयना या सन्तमका कते नद्विते में ते ने स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित अन् तीरेया न्यात्वरवायने खन्य हिन चेत्रंय हे का न्यात्र स्थान स्था विवासरवारियारवायने संवर्षण युजानिर कानामित्व वासरेवहंबनीन एवा परिवन केव सावराष एत सन्तिय नी या नरभागे चारवाने के सीता उन्नोत्रे न नो कि तो स्व तो सु तमे वी नसा कि विशेष मिवड्कताभ्यातेन यत्रच वारदेवः परमामात्रक चेलामीवः त्रयुद्धानुमनः ज्यतिक देशते कीरदेशि

संग्रम्मा

गमादिरेत्रये स्वष्वतं वर्तते वृत्ती द्वी धुवेवालः रणः श्री ः प्राची वविः ववः भी मादवद् वरं लेपः मरणरे नातः र् विश्वियं स्वराविधासकार्यस्योक्त्ये वतः यकराति करेन्याच्यः र यस्यामध्याधा चिभमते व प्रति प्रति वर्तते विद्यार प्रविद्याः स्वयाः प्रति स्वता स्वर्णाः स्वयाः प्रति स्वता स्वयाः स्वयाः प्रति स्वता स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः प्रति स्वयाः स्वयः स्वय

सतीयुवरपुत्रातीने किताने सिद्धानि किताने के स्वानि सिद्धानि सिद्ध

 धीक्रामाच्यामानात्रवेषात्रनात्रव्यातित्वर्णात्रवर्णः उप्रहेषात्रविविविविद्यात्रवर्णावनात्रविविविविद्यात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्णात्रवर्ण

ध्यानोतिनार्त्राम्भेयावितिनात्तनः २५ कालाप्रभति स्तर्वितिनिति हिविवर्षाते प्रदेनना दिकार्यानं नवः विदिः प्रवेतस्त दन्त्रम्या यितिनात्त्रभ्यावार्थस्य प्रवेति स्तर्वात्रभ्याः विद्याः १५ उपायं प्रवेति स्तर्वात्रभ्याः विद्याः प्रवेति स्तर्वात्रभ्याः विद्याः प्रवेति स्तर्वात्रभ्याः विभाषः स्वातिस्प्रक्रे स्त्रिम् विद्याः प्रवेति स्तर्वात्रम् स्त्रिमाष्ट्रम् स्वातिस्प्रक्रे स्त्रिमाष्ट्रम् स्त्रिमाष्ट्रम् स्वातिस्प्रक्रे स्त्रिमाष्ट्रम् स्वातिस्प्रक्रे स्त्रिमाष्ट्रम् स्वातिस्प्रक्रे स्त्रिमाष्ट्रम् स्त्रिमाष्ट्रम् स्वातिस्प्रक्रिमान्त्रम् स्त्रिमाष्ट्रम् स्वातिस्प्रक्रम् स्त्रिमाष्ट्रम् स्वातिस्प्रक्रम् स्त्रिमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रिमाष्ट्रम् स्त्रिमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम्यान्त्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम्त्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम्त्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रम् स्त्रमाष्ट्रम् स्त्रम

इमायसँहाराविति ययिष्णाचीन विधिष्ण नैः चेनेत्रिभः चकरणाया क्रमायसँहारावितिर छेपते तथाविष्णैनीनविहिष्ण विधेष्णे इतम्मारणात्मकार च्यात्मकार च्यात्मकार क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्

त्ति वुनाराचा निवनचे वृक्षास्त्रीयदेशीयुक्त स्वर्धः स्वास्थ्रमाहहतुतीदश्चिति ज्यादिकवये इ

37

न्यसंयिदरमेकलं ब्रह्माभिन्तं वाजानेतः त्रणाच्युत्यः ए वक्षयामानेद्रित एका द्वः सर्वभनेषुग्र ७ इति अस्यात्मा द्वितितार्गभयता जी वस्य वे धर्मित परमच्यारपद्वाने द्रपत्व नाना ते भोग व वस्यू न पन्ने अ प्रतिदरमक्तिनिहित्रमामा सम्पर्वदे हस्विधितावृत्रोचे कमीरिक मिष्णामिषामकं भवि तमहित्रीव त्रात्र एका त्रवार गर्व निरंतः कर ताविक न महिता ने भिन्न ता द्वपद्य ने एवं व्यवस्था देते महित विद्यान प्रवास कर ताविक न महिता ने भिन्न ता द्वपद्य ने स्वाद विद्यान प्रवास कर ताविक न महिता निरंद कर ताविक विद्यान प्रवास कर ताविक विद्यान प्रवास कर ताविक विद्यान कर

ववपितः अवेष्ट मेर्रेतत समवाववत्तेन साविन अतेन सलकार एवं वित्र एवं कार्य मवेकार णवाणात्रामस्य वा जायेक एंका प्रकार एभावः नित्वपृद्धो एम अंक स्वित्रे वे भेग रहा ते इसारानेश्वरहवत्र तियोगि ने नामनोधिकार्य ते भविष्यक्षीति चेत्र हंत्र प्राणभावत्र तियोगितं निरात्र्यं मा मुदंबी जा चेल शविवाद्य समा हितो वेस का दब्दा पति । प्रामानपति वेपिता माय ते ने वक् वैस्त्रां मां कारत नवसका विवेदा विद्युर ते का दक्ष का पा वेदा की पात्र ते जा विकी विशेषा विवेदा विद्युर ते की सःविक स्थासात् तस्मासाद सिहल स्मातेना निर्वन नीय तेव कार्य कार्य को पिति विवर्त वादा वाषी काते तयाचादिद्याच्याच्युद्रद्रद्राणि रेतामसेत्रिकायर्थः तन्तविद्यानार्याण्यस्यतेषेन्यविद्यायाः स्यत्म स्त ज्ञारिभावतार वृद्यवर बत्यकत्र यताच निह हेत प्रचंचकत्यना हेतार विद्यायाः कत्य कानरीसे म रक्षण्यक त्यक्ते ज्ञात्मात्रवार मिवद्याताम्युपाने चनवर्यानात त्याचेकित्रानेनस्वित्रान्या त्वस्थास्य पर पान्य साम्यात्वा व्यवस्थानात् तथा चनाव स्थानात् तथा चनाव स्थानात् स्य भावतंवामने नित्यतेत्रयोत्रकं नभवति विंतपरमार्श्वतं ऋविचायात्र्यस्व दिल्लातात् सानिवर्ताते प्रविचित्रः विचायात्रस्व स्वादि स्वत्यात्रस्व स्वादि स्वाद कार्यश्रीयार तीनवान मात्रसम्बद्धिया हिल्कि दत्ताभावात एवंचवद्यं तानपूर्वक वाकार्यवा प्रमित तद्वतिर्वितिर्धाप्तन मुष्यनं अधाननारी स्वातं रायनेना नेदन्यतं द्वातं स्वातं दिवसितिमानि भ तानिनावंतरत्वादिस्तेः अन्ववादित्वनेन सद्वतं तित्यतं विभ्रतं वस्वदेशकाला नव्यते धनातः स्व शिक्षनेन स्वष्रकाशानानन्यतं धान्त्राक्षेत्रविद्यां कृतक क्रियनेना दितीयतं स्वातिनाने नेपामा धेत श्राकेन्यर्पि विते से सारंकारसा त्येन कार्ति त्याति योजी वः त्रस्य दे दिया दे जिल्ला हितारमा तेष्र्र नेपात अनुमतेवान् अविद्याणासन्या वेषित तात् ते परंस्त्य दी महीतिसंवेषः अस्पती हतास्य वतः गच्छतः सर्वदापरिणमम् न स्वेत्पर्यः न नादिगच्छत्रिता न न नातादेवदना स्तादेवदना दिव प्रतिसंत्रायायाः से द्राविष्ठालिंगा व्युच रेतिएवमे वास्ता दास्त्र न स्वेएत ग्रास्त्र ने व्युच रेतित्र न श्रुतेश्वसत्त्वत्र मारियान नावा स्वयाह इतरत्रेश्वति ज्ञाच्याणे तारिय येः तथाव श्रुतिः 

इति सादिकि हिरात्वाभीके से हदाम हवा देशो है ने हिराव्या भीति वे देश बक्ता ने का हा ले वे ता उसा नित्त से कि त वितः करति सत्या मराभूतका श्रित्या करद्वा चेतिर एत्रार्थ विदेव देव देव देव वित्र वित्र विवास तथा विद्या वित्र वि योत्र माणविद्धात प्रवेषविवेदां ऋषति तसे तं हरेवमासविद्धारी समदे वेश राज संविद्धारी निहिर त्याभेन हेदा विभावयोः प्रमेत्रा धीनना दर्श यित्र द्येष हदा मनमेव नेने न तम्सेना धारितनान 'इतिया अनेनवर्का तरपी विवेदिशितं ने पाचित्रते यः सर्वेषु भरतेषु तिष्वत व वेग्या भत्रभ्यां तरायं वकिति। भंगतिनविदः यहा सर्वाक्षिभ्रता विश्वरीरयः सर्वातिभ्रता न्यंतराय स्वयनेष ते स्थानमानक्ष्मप्रस्तर्गा वास्वीतयी मितनपर मात्रानेपितवार वंति नवदाहत मुतीने ब्रह्म तिज्ञामाण्यन संभवति ब्रह्मणः सिद्धं विस्माने संग्रेशका मान्य संभवति ब्रह्मणः सिद्धं विस्माने संग्रेशका मान्य संभवति विस्माने स्वापका तत्व ल्लामाएं विसंवादे त्वा धिति विवयता सत्तरा न कामाएं ते या च त्र धान त्र माएं दिकार एता बा धक मन र माने स्थावेकाश्रंभविद्या तीत्वात अव्योत्वात रवरति वत् वत्रवत्वाति वत्रवत्वाति वत्रवत्वाति वत्रवत्वाति वत्रवत्व वस्ति सरप्रतार्विकारयो महाति में हम् तान्म नुभवति में हादिविधः जावणर्षिविच्याः निम्न वित्रेष्ट्रप्रम धाने के वेदान पास्ति वार विमु से रन्भ को वेदान गास्त्र विचार परा लोन यह स्त्राने नाम मना वर एप न वस्तवस्थानीवरणमनवर्तते एवन किव्यक्तिय ने स्वत्र विषयम ने नित्र के तिते के प्रति ते के प्रत

्रिया विषय में मिल्या विषय के मिल्या र्तः तस्माद्विविवयवभारमाप्रे त्यास्वरप्रचेतन्यस्य वतसाधवत्वन्यरिवर्वकत्वात्तिवर्वक वन्यस्य दत्त्रवेदात्रां माला में वाहत में विश्व हिला माना वायोग्यत हे पादि तीन ते व्युत्पादित आध्य काएं भितिः तवंपकाईनतत्वद्वाचारीमृत्तावराईनत्वत्वं वत्तारभते न्यू या रेषाववादा स्रांतिः यूपंचेत्र पंचे तेरित्याचेन नेजाबारीत्यादिना यने ब्रेट्सिणित्रपाणं नेजाव नाजांतर्गः विवर्गः सम्बाधिको वजने रजनेवते । श्री दार्गित्रपाणं नेजाव नाजांतर्गः विवरिधक रणन्याचेन्त्रपं चनविष् द्रमधते छ राग्वेत्रद्रमनेर अवलितिभवः ज्यक्ति तृश्वेति विवति स्वति त्यावम्बृतिः यद्त्रेतितित्वपंते तसम् भूषं यच्यु क्तितदण्ये द्वितद न्यस्यायागाद ये दित्ता रेभणि विका रानामध्येयं मिलिन्याणियेवसयाप्रियादेना हेत्वस्यापिविकारस्या व नेतार्पायति वसारंभवादे जायति लम्बार्वां संभवित तचाहि परमाखंतरे एसंयु न्यमाना छ एक मारभूते इत्यु चेयते तत्र छ एका समवाचे कार्षिक्रतः संयोगः यस्मार्वाः कात्र्य नवास्मवेत एक देशेनवाः आ ग्रेप्रियमन्पपतिः हितीयसमबाय वन्तपतिः एवं परि एको विषया तस्यका तस्य नवा एक देशे नवा न्या चेकार एवि नाशा प निः दिनी येमाव

र्स्मर्वरणियार्षेषकार्यवस्य ज्ञानिद्वत्तारणक्ष्यं विषय्वादनम्बर्वः स्याप्त्रम् विषयः समितिस जेल समीर जेल खार याते इतरत इस जेव कारा इस तो ज्या दाता भा अध्या कारी निया ते दा कार लि ति मुक्ति का प्रिन्यारेक्ष्मित्राश्चित्राशामात्रांक्षाक्षात्रात्रात्रात्रेत्रात्रे वर्षात्रे यह नाश्चित्रदिन्त्रे निवस्ति निवस् हेता धरिभ त्रेष्ठा रवादी तृसान्व पात् ए वेहदिषि इतरतः इतात्र का वीता तद्य लेभा त्या दिखे वे वावपात्र पपतादिते षाच्च नासतो जगतार एतीया है अर्घ छ भित्तरित निहसतो पर्याचिति त्वां कि अर्थ दिया वर्ष है निर्माय कि वर्ष के निरम ्रमेवः तथारङ्किः यः सर्वतः ससर्वविद्यस्थानम् येतवः तस्मादेत इत्येनामन्यम् सर्वेत्रायते इति सदवताम्यदे सथनासिहेक् मेबादितेषं तदेस्तव द्वस्या यूनायेथत्या द्वाच स्वरूपसाधनप्रयो नेनादि ज्ञान वृत्रावनगत्नारण् वंद्रीयित्रेश्रीतः सर्वप्रकारेणम् मान्नेति विशेषत्र असर्व वस्त ज्ञानातीति श्रीतरः सर्व ज्ञः सर्व वेदिति पद ह्याची दितः अर्थानामितातिद्विते अर्थविति स्थानेसर्विते क्यानेस्याने तिस्वपित अर्थ वाचेषार्तरतमाचिवित्रवेलेवसंवयः एवेवस्वतिष्या द्वात्रत्वप्याणुकार एवादः वयानकार एवाद प्रावे राक्तः नत्र मामत्कारणतापरमाणू नाषधानस्तिभवेद्यति सत्ते परिमाणनसार्व त्रसंभवाने वह्याण्यानि दे धैक नेन सर्व तान करिलादियते वाह स्वरोद्रिति स्वयमेश्रा ने में महारा नियमें में महारा में स्वरा में स्वरा में स्वरा में ण बस्तितात्रकाशतर्त्वार्वर कत्त्वाप्चारिकतेनसर्वविषय्ज्ञानिवय्ज्ञानन्यविविद्यतेनतात्नप्रानस्या स स्वारणता प्रदेगरत्य थेः एवंचे क विज्ञाने ने सर्वि ज्ञाने प्रति ज्ञासमिषिता भवति अस्याप्रधानि ज्ञानेन ने तता अस् नरंभवेष तर्कापीणां प्रवाणां ज्ञानार्थभवात वृद्याणां वित्र वित्र व्रवाणां स्वतावत इपतारित रेषां चत्र उद्यान्त मस्वाति का चना अतंत्र्य मान्य मान्य विज्ञाते विज्ञाते कि त्या कि त्या मान्य विज्ञाति का विज्ञाति कि त

ने विन्त्र वित्ती त्याचिया ज्ञात्मनियल्यो ६ छे अने मतेवि जाने इदेस विविज्ञाते वित्ति ने त्याले अनिया दिने कि व ने स्वीव ज्ञानमित्र ज्ञापपतेः नमुब्र मुक्र एकि चोक्षि ज्ञाने मसर्वि विज्ञाने प्रति ज्ञाने प्रयोग वेद स्थापाइ वेय ने मखाते माम्युवामान तस्य ब्रम्बा व नेचेर्वेयते ना प्रामा एवं प्रतेगातः कि वलात ब्रध् कारण वा विवयस्या चत्रसालंकाच्यापाखेकाकी व इक्षेत्रधानमेथि लख्य सवित्रको से ने दे त्यादि के विवेद यसे ने विस्तादित न यान आसप्रज्ञासारिव लीलपाविभीवितवान तथाच छतिः ग्रस्थम्हताम् तस्य विकासितमेत घरण्वेरी यन विद्या शावेदस्या विव्व होतापादा न ते व्यवस्था विव्य ति त्राय चा र से यतं पुर कमाव न मति पे र से यते विक्ता के ति विव्या न प्रविधि वे विस्य पुर व न मती र मिल्य मा स्थापित हो माल्य व संगः वर्ति न मा मो बेचा चार से यत्ववस्था व ने ने विक्ता का का स्थापित से मा न सा ना न से में से प्रविधि के से रिततं प्रवेषतं मापे सत्ति स्वापामा त्या वित्तं तत्त्व ने देवे परित्य माना माना त्या र इदमेव प्र त्यानिष्ठावित्र एक्तेन दर्शितं वयाति निष्ठायः प्रत्या इता वसाईति ने यह बन्न नः सब्जा व विद्यानाते ए वर्षे यदाणाधनाशतनायमाना विविविविविविव्याः तथ्यं खिवदातिरिक मानाविष्यतात् तथा वेदत्र्यं जो नक्ति स्कालना नवहाणः सार्वत्र वाचाना नवा वेद्राविष्ठ वेष्ठ एवे नश्वीएक विताने ने हुर्वे वितान प्रतिज्ञानसेका वनीयां वा या गाना ने अववे रशाम नुमानं हिले वेद निष्ट्रसे वी छेत्र का प्रोनश किः सर्याय निष्कार्ये गत्रका प्रानशिक्त व के प्रापादान करीयगतेष का ज्ञानशिक्त विदिति अतिविद्यादान तेनाले ब्रह्मतं : सार्वतिषिदः के विति हिर प्यामेश्वे वेदं प्रवक्ता जगकार ले वे त्या उस्ता विस्तव रोति हृद्या प्राप्ति वेप

डोम् अतिक रमेष्रमेन ने ततातस्य सारतः प्रीभाग वत्र पद्याने का विद्या विद्या विद्या प्रेस निव असम्भेरी द्वावेष्ठ विरावित्त वै: ती व्यवेद विरावित ति विरावित क्षा विरावित विर श्रमात्र रेड व्रियंग्यतात्मधीत वधीभूत मधीद्रश्चित्रभातान् वादराव तात्तमेवरोय ते ने पित्रमातान् मारच यति यनाच संयत्र प्रति वेषदे सत्ये व वेष्ट्री महीति सेवेषः सत्य मवा केत्र विद्यावहार मार्जवा केत्र चाव र्रेगायात यराष्ट्रित वरमार्थ सत्य संस्था केता वा का ति त्या विश्वास सत्य सत्य सित का ता वेस स्थान से स सिति प्राष्ट्रिताना स्यूलक दलक्ष्राना व्यवतारतः सत्याना मिरिशानभूतेवर मार्च सत्यमा त्यानेदर्शः याते एवं सर्वा त्र त्रं तेव त्राते दात्रय तिरं सर्व काला तत्व सतीत्यादि खतिरावे ब्रह्मात्वश्रादे। दितं परंत त्र वा धंदर्शयति सर्वभ्रमा धिष्ठावता सर्ववाधावधिता च्या मार्थस्यतं नहिनिरिध छाने भ्रमाति नवानिर् विधि वी धः तत्र प्रवी भूमाधि छात्रतं च न्या चला चला रियारियारियां मर्व वाधाविधावेच ने ने वारि मरीय पावित मक्रेय त्रिक्षेत्र के साथिता तेपरे ससे सर्वाधिका त्रसमा त्र प्रश्वास तो प्रति प्रति स्वास ने विषय स्वाधिक स्व त्ययाने त्रित्या दे ता त्रित्यं ज्ञा त्रा वा दे प्र वा हो त्या वे ते विष्या विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय ग्रातेतिक लंग्रायमान्यत्यारिश्रताचा समाताकारमायन्वेनविति । याप्तनेतवस्वन्यानचेत उगमा वर्ते मा वर विचाप बाह क्ये व प्याय मेरे ब मा चे हिल है ने स्था ने देश देश कि स्था नि वस्त्रस्यानचे समित्रदिशिधिकि विनद्विराध्याषेय या वाच्ये तरामामिने सादि दिविरामणुपा

गर्वसालिकारं तरेवत्र हालं विक्रियेर्द्र प्रथमत्र ति अक्रोतवाया व ते हथतिवन्मात्रकार एका ने ते व्यद्मिति अतेल सार्वचावनी मानायां त्रिदिखासन रूपहा युक्त अवरात त्रावना वर्ष वसाना सर्वसायनियानाधामहीत्यतं एतत्यचमंगल तंस्वदासर्वकायं चनातिते छामंगलं ये बाहार स्थाप म विन्त्रेगलाय तर्निति मारिकालि के एवं अवस्थ ब्रह्मालिति स्वाह्यामा नस्य या मास्त्र स्य ने प्रतिपाद्यित्व त त्यदार्षरपतामार जन्मा ग्रस्यवर स्वादिना त्रस्य प्रवादिस वा त्रप्रमाल सिधावि तस्य प्रगता न नादि जन्म स्यितिभगवत्राभवतीतिस्यधीम्हीतिस्वधाः तथाब म्रुतिः यता बाइमाविभतावि जायंते येन जाता निजीवित ध्ययमाभिविशंतीत्याद्यात्रानंदेवहोतिबनानात् ज्यानंदाद्येवतिकातिनायत्रमाद्याचनगन्नान्य तिलयकारणतां ब्रह्माणादुर्शयति यत्रशति प्रस्तायं वर्मा निकर्तः प्रकृतिशतिया किनिस्र एतात् न नादी तित्रहाला निनावह के तिः सर्वादी ति सर्वामानीति पावत नन्न न मादिन मित्रि का पेत्व के वेना पेत् य नुन्यस हेस्दमय जामिरितिष्ठतेः म्यनेवनगत्तारण मसने त्यार युर्वेषा दिति रूरे मिरि दे सिरितिस द्वेष्ट्रेन्तारणलेकाचेखनस्यत्वात् इतरत्त्रत्रप्रमतानन्यत् प्रन्थतिद्वित्रतीत्वभावात् कृतस्त खंड सोम्परंस्पादितिहावाचक पंरातः सन्नाप्रते निवासेनामतः कारणताष्ठिते याच सद्भेष्यम् मार् यानिकर्णः सदेवसे क्रेरमयात्रासी दिति श्री वाक्यान्य पात् रत्रते आस वार्यम् यात्रासी दित्यसनः सत्तान्व याचितिवा त्यांनासत्यर सन्दमतेन भाषा बत्या तत्येवया जनीयं एत ज्ञासमान की दिति समन्या ध्यायेच व